Career Companion
A future begins here ...

रश्मि नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान

Teacher's Manual

Class VI to VIII

Written by :

Author's Team

(Vidyalaya Prakashan)

Career Companion
A future begins here ...
A Unit of Vidyalaya Prakashan
An ISO 9001 : 2008 Certified Co.
● New Delhi ● Meerut

INDEX

Sl. No.	Book Name	Page No.
1.	रश्मि नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान – 6	3
2.	रश्मि नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान – 7	16
3.	रश्मि नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान – 8	29

नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान-6

खण्ड 'क' - नैतिक शिक्षा

पाठ-1 : वंदना

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. सरस्वती जी को 2. सच्चा ज्ञान

3. सभी का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✗)

3. (✓) 4. (✗)

5. (✓)

ग. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. प्रस्तुत कविता में बालक माँ सरस्वती की वंदना कर रहे हैं ?
2. बच्चों ने माँ से सच्चे ज्ञान का वरदान माँगा है।
3. बच्चे अपने देश को महान बनाना चाहते हैं।
4. बच्चे दया का भाव अपने भीतर लाने के लिए प्रार्थना करते हैं।

पाठ-2 : नैतिक मूल्य

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. ये सभी 2. 'अ' व 'ब' दोनों

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✓)

3. (✗) 4. (✗)

5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. नैतिक
2. असहायों
3. क्रियाशील
4. एकता
5. बेवजह

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. ऐसे मूल्य, जो हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि कैसे हमें व्यवहार करना चाहिए, वे नैतिक मूल्यों की श्रेणी में आते हैं। जैसे – ईमानदारी, निष्पक्षता आदि।
2. नैतिक मूल्य वे मानवीय मूल्य हैं, जिनमें सदाचार, परोपकार, दया, सहनशीलता, अनुशासन, मानवता, श्रम, सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्य–परायणता तथा ईमानदारी आदि गुण निहित होते हैं।
3. सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत दहेज–प्रथा उन्मूलन, बाल मज़दूरी का विरोध, छुआछूत का विरोध, नारी शिक्षा, रिश्वतखोरी का विरोध आदि गुण निहित होते हैं।
4. यदि हमें अपना जीवन सफल बनाना है तो नैतिक मूल्यों का सहारा लेना ही पड़ेगा। अपने तथा राष्ट्र के विकास के लिए नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों को अपनाना परमावश्यक है। हमें आज ऐसे राष्ट्र की आवश्यकता है, जिसमें अमन–चैन हो, चारों तरफ खुशियों का माहौल हो, स्थायी सरकार हो, रिश्वतखोरी न हो, नारी जाति का सम्मान हो, धर्म और जात–पात के नाम पर राजनीति न हो आदि। ऐसे राष्ट्र की कामना हेतु हमें स्वयं को सुधारना होगा। अगर हम स्वयं नैतिक मूल्यों को अपनाएँगे तो राष्ट्र अपने आप ही 'रामराज्य' बन जाएगा।
5. हमें अपने उज्ज्वल भविष्य और देश के विकास के लिए अनैतिक कृत्यों पर अंकुश लगाना होगा। नीचे इन कृत्यों से मुक्ति के कुछ उपाय दिए गए हैं। इनको हम अपने जीवन में ढालकर पुनः उस भारत का निर्माण कर सकते हैं, जो पहले कभी 'संत–नगरी' तथा 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था–
   1. हमें अपने माता–पिता, गुरुजन तथा बड़ों का आदर व सम्मान करना चाहिए।
   2. गरीब और असहायों की सहायता करनी चाहिए।

3. ‘झूठ’ का दामन छोड़कर ‘सत्य’ की राह पकड़नी चाहिए।
4. हमें आत्मिक चिंतन से जुड़ना चाहिए।
5. स्वार्थ की भावना का त्याग करके परोपकार की भावना अपनानी चाहिए।
6. सदैव क्रियाशील व परिश्रमी बनना चाहिए।
7. हमें भौतिक जाल से निकलकर राष्ट्रीय चरित्र धारण करना चाहिए।
8. गुनाहगारों को कड़ी-से-कड़ी सजा मिलनी चाहिए।
9. राजनेताओं के चरित्र की जाँच-पड़ताल करके ही उन्हें चुनाव लड़ने दिया जाए।
10. ऊँच-नीच की प्रबल प्रवृत्ति को समाप्त किया जाए।
11. हमें विनम्रता और धैर्यपूर्वक व्यवहार करना चाहिए, किसी पर बेवजह भड़कना नहीं चाहिए।
12. हमें मद्‌यपान या नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए।
13. दहेज-प्रथा को समाप्त कर देना चाहिए।
14. बेरोज़गारों को रोजगार दिलाना चाहिए।
15. प्रत्येक भारतीय नागरिक को एकता के सूत्र में बँधना चाहिए।

पाठ-3 : मीठी वाणी बोलिए

क. सही विकल्प पर सही ‘✓’ का चिह्न लगाइए-

1. शत्रु बन जाएगा　　2. ये सभी

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)　　2. (✓)

3. (✗)　　4. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. निर्मल　　2. अपमानित

3. शिष्टाचार　　4. डाँटना-डपटना

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. हमें ऐसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए कि जैसे मुख से मिठास निकल रह हो; ऐसी वाणी दूसरों को तो अच्छी लगेगी ही, स्वयं को भी निर्मल करेगी।
2. कौए की 'काँव-काँव' हमें अच्छी नहीं लगती और हम कौए को उड़ाने की कोशिश करते हैं। हमें कोयल की 'कुहू-कुहू' बहुत ही मीठी लगती है और उसे बार-बार सुनने को जी करता है।
3. द्रौपदी ठहाका मारते हुए बहुत ऊँचे स्वर में हँसी, और कहा "अंधे के अंधे ही होते हैं।"

   इन अपशब्दों को सुनकर दुर्योधन बहुत अपमानित हुआ। उसने मन-ही-मन द्रौपदी के इन व्यंग्यपूर्ण शब्दों का बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इन कड़वे बोलों का परिणाम क्या हुआ ? 'चीर हरण' .... जो महाभारत के युद्ध का कारण बना।
4. हमें सभी से उचित शिष्टाचार के अनुसार बातें करनी चाहिए। जब आम बड़ों से बातें कर रहे होते हैं तो आपकी वाणी में विनम्रता तथा शिष्टाचार होना चाहिए। यदि हम अपने बराबर वालों से बात कर रहे होते हैं तो हमें वाणी इस प्रकार बोलनी चाहिए, जिससे पारस्परिक सौहार्द की भावना जाग्रत हो।

पाठ-4 : गुण की महत्ता

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1.उसके गुण 2. मिट्टी के पात्र वाला

3. सम्मान

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓) **2. (✓)**

3. (✓) **4. (✗)**

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. दो पात्र 2. महत्वपूर्ण

3. सौंदर्य　　　　4. सभी जगह

5. मिट्टी के

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. चंद्रगुप्त का प्रधानमंत्री आचार्य चाणक्य था।
2. चंद्रगुप्त ने अपने गुरु की प्रशंसा करते हुए कहा कि ''काश ! ईश्वर ने आपको सौंदर्य भी प्रदान किया होता।''
3. चाणक्य समझ गए कि चंद्रगुप्त को अपनी सुंदरता पर अभिमान है। उन्होंने एक नौकर को अपने पास बुलाया और उसके कान में धीरे से कुछ कहा।
4. गुणवान व्यक्ति का सब जगह सम्मान किया जाता है।

पाठ-5 : अनमोल वचन

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. कवि कालिदास द्वारा　　　　2. 'अ' व 'ब' दोनों

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)　　　　**2. (✓)**

3. (✗)　　　　**4. (✓)**

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. महान　　　　2. अंधविश्वास

3. इंद्रियों

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
   औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय।।
2. अच्छी पुस्तकें साथ रहने पर हमें मित्रों की कमी नहीं खटकती।
3. जिस प्रकार अग्नि सोने की परखती है, उसी प्रकार आपत्ति बहादुरों को परखती है।
4. कर्त्तव्य का मार्ग यश प्राप्त कराने वाला होता है।

पाठ-6 : विनम्रता

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. नम्रता के साथ मीठे वचन बोलना 2. गालियाँ

3. कठोर होते हैं 4. विनम्रता का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓) **2. (✗)**

3. (✓) **4. (✓)**

5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. विनम्र 2. विनम्र

3. कठोर, अभिमानी 4. शिष्यों

5. उपदेश

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. 'विनम्रता' का हमारे जीवन में भी बहुत महत्व है। समाज में विनम्र व्यक्तियों की प्रशंसा होती है और उनको सम्मान मिलता है। वे अपने शत्रुओं का भी हृदय जीत लेते हैं। उनके शुभचिंतक भी बहुत होते हैं।

2. एक दिन राजेन्द्र प्रसाद अपने कार्यालय में बैठे हुए थे। एक युवक बहुत क्रोध में उनके कार्यालय में आया। उसने राजेंन्द्र बाबू को गालियाँ देनी शुरू कर दीं, परंतु वे शांत रहे। उन्होंने क्रोध नहीं किया। थोड़ी देर बाद वह युवक कार्यालय से बाहर चला गया, परंतु उसका क्रोध फिर भी शांत नहीं हुआ था।

   केवल कुछ ही मिनटों के बाद वह युवक फिर कार्यालय में आ गया। इस बार भी उसका चेहरा क्रोध से लाल था। उसके कुछ कहने से पहले ही राजेंद्र बाबू ने उससे बैठने के लिए कहा और उसके कार्य को पूरा करने का आश्वासन दिया, जिसके लिए वह वहाँ आया था। गुस्से में पागल युवक ने जोर से अपना हाथ मेज पर दे मारा। उसके हाथ में चोट लग गई। राजेंद्र बाबू ने कहा, ''मुझे आपके हाथ में चोट लगने का दु:ख है।'' उनके इन विनम्र

शब्दों को सुनकर उस युवक को अपनी गलती का अनुभव हुआ। वह राजेंद्र बाबू से हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगा।

3. चीन में एक महान संत और दार्शनिक हुए थे, जिनका नाम था कन्फ्यूशियस।
4. कन्फ्यूशियस ने अपने प्रिय शिष्यों को अपने पास बुलाया। सभी शिष्य उनकी चारपाई के पास आ गए। कन्फ्यूशियस ने एक दृष्टि अपने शिष्यों पर डाली और बोले, 'मेरे प्रिय शिष्यों, अब मेरी अंतिम घड़ी निकट आ गई है। अब शीघ्र ही मुझे इस शरीर और संसार को त्याग करके जाना होगा। मैं शरीर त्यागने से पहले तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ।''
5. सभी शिष्य गुरू जी की बातें ध्यान से सुन रहे थे। कन्फ्यूशियस ने एक बार अपने सभी शिष्यों को देखा और बोले, ''तुम सब मेरे मुँह में झाँककर देखो।'' उन्होंने अपना मुँह पूरा खोल दिया। जब सभी शिष्य उनके मुँह में झाँककर देख चुके तो कन्फ्यूशियस ने पूछा, ''तुमने मेरे मुँह में क्या देखा?'' सभी शिष्य हैरान थे। क्या बताएँ ? वे अपने गुरु जी के प्रश्न को समझ नहीं पाए थे। वे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। कन्फ्यूशियस ने फिर पूछा, ''क्या तुम्हें मेरे मुँह में जीभ दिखाई दी।'' सभी शिष्य एक साथ बोल उठे, ''हाँ गुरुदेव, जीभ तो दिखाई दी है।'' कन्फ्यूशियस ने फिर पूछा, ''और दाँत..?''

   शिष्य बोले, ''मुँह में दाँत तो एक भी नहीं है, गुरुदेव !''

   अब कन्फ्यूशियस ने अपने शिष्यों से कहा, ''जब मनुष्य शिशु के रूप में जन्म लेता है तो जीभ उस समय भी उसके मुँह में रहती है, पर दाँत नहीं रहते हैं। वे बाद में आते हैं। बुढ़ापा आ जाने पर दाँत टूटकर गिर जाते हैं, पर जीभ अपनी जगह पर फिर भी विद्यमान रहती है। जीभ जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति के साथ रहती है, परंतु दाँत बाद में आकर भी पहले गिर जाते हैं। क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा क्यों होता है?''
6. कन्फ्यूशियस के अनुसार, ''दाँत कठोर होते हैं, इसलिए वे जल्दी ही टूट जाते हैं।
7. मनुष्य को अभिमान और कठोरता छोड़कर विनम्रता और मृदुता को अपनाना चाहिए।

पाठ-7 : सहनशीलता

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. सहनशीलता　　　2. शांत भाव से

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)　　　2. (✓)

3. (✗)　　　4. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. दब्बूपन　　　2. घृणित

3. हानि

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. व्यक्ति के दब्बूपन को कदापि सहनशीलता नहीं कह सकते क्योंकि गांधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन में आंदोलनकर्ताओं की सहनशक्ति देखते ही बनती थी। पुलिस उन पर बर्बरतापूर्वक लाठी-डंडे बरसाती, फिर भी वे उसे सहर्ष ही सह लेते थे। यह उनका दब्बूपन नहीं बल्कि उनकी देशभक्ति की दीवानगी थी क्योंकि वे आज़ादी पाने के लिए लालायित थे।
2. साड़ी संत तिरुवल्लुव द्वारा बुनी गई थी।
3. सहनशील होना एक ऐसा गुण है, जिससे जीवन का वास्तविक विकास होता है और हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं।
4. यदि तिरुवल्लुवर उस व्यक्ति को साड़ी फाड़ने से रोक देता तो उस व्यक्ति को फिर सुधरने का अवसर न मिलता।

पाठ-8 : परिश्रम का महत्व

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. 'अ' व 'ब' दोनों

2. ये सभी

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)
2. (✓)
3. (✗)
4. (✗)
5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. पाणिनी
2. कठोर पत्थर
3. 300 से अधिक
4. वरदराज

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. आचार्य जी ने उसे बुलाया और कहा, ''बेटा वरदराज, तुम्हें गुरुकुल में रहते कई वर्ष बीत गए, किंतु तुम विद्यार्जन में असमर्थ रहे। मुझे स्वयं इस बात का दु:ख है कि मैं तुम्हें कुछ ज्ञान नहीं दे सका। मुझे ऐसा लगता है कि तुम ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाओगे। इसलिए घर लौट जाओ और समय बर्बाद मत करो तथा कोई अन्य काम सीखकर जीविकोपार्जन में लग जाओ। शायद तुम्हारे भाग्य में विद्या प्राप्त करना नहीं लिखा है।''
2. वरदराज ने देखा कि रस्सी की रगड़ खाकर जगत पर रखे पत्थर पर गहरे निशान बन गए हैं। वह बड़ी देर तक उन निशानों को देखता रहा।
3. बालक वरदराज बड़ा होकर संस्कृत का प्रकांड विद्वान पाणिनी बना।
4. 'अष्टाध्यायी' पाणिनी की प्रसिद्ध रचना है।
5. परिश्रम और निरंतर अभ्यास से सब कुछ संभव है। कठिन-से-कठिन कार्य भी परिश्रम से सिद्ध हो जाते हैं। अत: परिश्रम व्यक्ति का सबसे बड़ा संबल है।

पाठ-9 : हमारे पाँच शत्रु

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. 'अ' व 'ब' दोनों
2. सद्गुण
3. क्रोध

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)　　2. (✓)

3. (✗)　　4. (✗)

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. लोभ　　2. मोह

3. शरीर　　4. विनाश

5. बुद्धि

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. हमारे पाँच शत्रु सबसे ज्यादा घातक होते हैं। ये हैं -

   1. लोभ (लालच)　　2. मोह (अति लगाव)

   3. काम (कामवासना)　　4. क्रोध (गुस्सा)

   5. अहंकार (अभिमान)

2. क्रोध - क्रोध व्यक्ति का ऐसा शत्रु है, जो अपना फल हमेशा विनाश के रूप में प्रदान करता है। इस शत्रु से जितना बचा जाए, उतना ही अच्छा है। क्रोध में आकर व्यक्ति यह भूल जाता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और वह न चाहते हुए भी अपना काम बिगाड़ लेता है। कभी-कभी तो क्रोध में आकर वह कोई ऐसा कदम उठा लेता है कि उसे हानि उठानी पड़ती है और जीवनभर पश्चात्ताप करना पड़ता है।

   अहंकार - अहंकार का दूसरा नाम है- अभिमान । यह मनुष्य की बुद्धि को मलिन कर देता है। अहंकार के वशीभूत व्यक्ति दूसरों को अपने से निम्न तथा स्वयं को उच्च समझता है। उसके मन में यह भावना जाग्रत हो जाती है कि उसके बराबर का इस संसार में कोई नहीं है। जो है, वही है।

3. रावण को अपनी शक्ति का बड़ा अभिमान था। वह स्वयं का अजेय मानने

लगा था, क्योंकि उसने समझ रखा था कि उसके पास जो विद्याएँ हैं, वे अन्य किसी के पास नहीं हैं तथा वह किसी को भी सरलता से मार सकता है, पर उसे कोई नहीं मार सकता। इसी अहंकार के कारण उसने भगवान राम की शक्ति को तुच्छ समझने की भूल की और अपने हितैषियों के परामर्श को ठुकराया। इसी कारण यह युद्ध में भगवान राम के हाथों मारा गया।

4. अर्जुन ने जब युद्धभूमि में अपने सगे-संबंधियों को देखा तो मोह और विषाद के कारण ही वह यह कहकर कि "मैं युद्ध नहीं करूँगा", अपने धनुष-बाण रखकर रथ के पिछले भाग में जाकर बैठ गया।

पाठ-10 : दृढ़ निश्चय

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. बिहार का
2. 20 किमी०
3. पहाड़ को काटकर शहर तक मार्ग बनाने का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)
2. (✓)
3. (✓)
4. (✗)
5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. राज्य
2. यातायात
3. मृत्यु
4. दुश्मन
5. आयुर्विज्ञान संस्थान

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. कहानी में वर्णित किसान का नाम दशरथ माँझी है ?
2. दशरथ माँझी ने गाँव को शहर से जोड़ने के लिए पहाड़ को काटकर एक सीधा मार्ग शहर तक बनाया।

3. अपनी पत्नी की मृत्यु से दशरथ माँझी बहुत दु:खी हुआ और विचार करने लगा कि वह पर्वत बीच में नहीं होता तो हम शीघ्र अस्पताल पहुँच जाते और मेरी पत्नी बच सकती थी। उसने यह भी विचार किया कि गाँव में इसी कारण कई लोग, जो अस्पताल पहुँच जाते तो बच सकते थे, मर गए। उसके पर्वत को गाँव के दुश्मन के रूप में देखा तथा यह दृढ़ निश्चय किया कि मैं इस पहाड़ को काटकर एक सीधा मार्ग शहर तक बनाऊँगा।
4. सन् 2007 के मध्य में दशरथ माँझी बीमार पड़ गए तो बिहार सरकार ने उन्हें दिल्ली के आयुर्विज्ञान संस्थान में इलाज हेतु भेजा; परंतु उस नायक को बचाया नहीं जा सका।
5. यदि व्यक्ति कुछ पाने के लिए दृढ़ संकल्प कर ले तो उसे वह अवश्य ही प्राप्त कर लेता है।

पाठ-11 : समय का सदुपयोग

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. उनके सही समय पर करना चाहिए 2. पाँच-छह बटन

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓) **2. (✗)**

3. (✓) **4. (✗)**

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. सदुपयोग 2. खुश

3. समय 4. कद्र

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. समय के संबंध में संत कबीर ने कहा है कि

काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करैगो कब।।

2. साधु द्वारा मौनी को दिया गया पत्थर चमत्कारी था।

3. साधु मौनी से बहुत खुश हुए। उन्होंने मन-ही-मन सोचा, यह व्यक्ति बहुत उदार तथा दयालु है, इसमें त्याग की भावना भी है। साधु ने प्रसन्न होकर मौनी को पत्थर दिया।

4. मौनी ने उत्सुकता से दो-तीन कमीज़ उठाकर एक-एक बटन को उस पत्थर से स्पर्श कराया। वह पाँच-दह बटन ही स्पर्श कर पाया था कि अचानक उसके दिमाग में विचार कौंधा कि वह अब बटनों का तभी सोना बनाएगा, जब बाज़ार से खूब-सारे बटन ले आएगा। वह रोज़ बाज़ार जाकर बटनों का भाव पूछता, किंतु उसे सस्ते दाम में बटन न मिलते। उसने सोचा कल शायद बटन के दाम सस्ते हो जाएँ। वह फिर बाज़ार गया लेकिन उसे सस्ते बटन न मिले। ऐसा करते-करते उसके बीस दिन यूँ ही गुज़ार दिए। वह फिर बाज़ार में बटन का भाव मालूम करने गया तो बटन और भी महँगे हो चुके थे। अब मौनी बहुत परेशान था। साधु के आने में मात्र चार ही दिन शेष थे। मौनी को यह बात भी ध्यान न रही कि साधु छब्बीसवें दिन इस पत्थर को लेने आएगा।

   सस्ते भाव के लालच में उसने अपना समय नष्ट कर दिया।

5. छब्बीसवें दिन साधु अचानक मौनी के दरवाज़े पर आया और कहा-''बाबा को भिक्षा दो।''

   मौनी आटा लेकर बाहर आया। उसने जैसे ही साधु के चेहरे की तरफ देखा, वह चौंक पड़ा और कहा-''अरे बाबा, आप!''

   ''हाँ, बच्चे ! अब तुम उस पत्थर को मुझे वापस कर दो। तुमने अब तक तो काफी सोना बना लिया होगा। मैं अपने वायदे के अनुसार ही आया हूँ।

नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान-7

खण्ड 'क' - नैतिक शिक्षा

पाठ-1 : वंदना

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. इन सभी के लिए
2. ज्ञान की रोशनी
3. बेसहारों का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)
2. (✗)
3. (✓)
4. (✗)
5. (✗)

ग. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. बच्चे संसार में पीड़ितों और निर्धनों के लिए जीना चाहते हैं।
2. बच्चे चाहते हैं कि जहाँ भी अंधेरा है वहाँ उजाला कर दें और ज्ञान की रोशनी सभी लोगों के हृदय में भर दें।
3. बच्चे आहत लोगों के लिए अपना रक्त दान करना चाहते हैं।
4. हम दूसरों की खुशियों के लिए प्यार बाँटेंगे और सदैव दीन-दुखियों और असहार्यों की सेवा करेगें।
5. स्वयं कीजिए।

पाठ-2 : दूषित विचारों से बचो

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. 'अ' व 'ब' दोनों
2. ये सभी

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)
2. (✓)
3. (✗)
4. (✗)
5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. विचार, कार्यों
2. दूषित
3. पुस्तकें
4. विवेकपूर्ण
5. व्यायाम

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. दूषित विचार स्वयं व्यक्ति को ही नहीं, अपितु समाज व राष्ट्र दोनों को खोखला कर देते हैं। व्यक्ति में इन विचारों का उपजना कोई जन्मजात नहीं होता, बल्कि उसके कुछ ऐसे मित्र जो कुसंगति के शिकार हैं तथा कुछ ऐसी परिस्थितियाँ जो उसके प्रतिकूल हैं, इन विचारों की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी होती हैं।

2. दूषित विचारों का जन्म देने वाले कारक - दूषित विचारों के उपजने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

   1. प्रत्येक घर में रखा टेलीविज़न दूषित विचारों के लिए उतना ही दोषी है जितना कि दूध में जहर मिलाने वाला एक अपराधी व्यक्ति। आजकल हम देखते हैं कि जैसे ही हम टेलीविज़न का बटन दबाते हैं, एक युवक-युवती भद्दा नाच करते हुए नज़र आते हैं, जिसका सीधा दुष्प्रभाव दर्शक पर पड़ता है। दूसरा बटन दबाते ही कुछ लोग हिंसा और मारधाड़ कर रहे होते हैं। इसी प्रकार जो भी चैनल हम आगे बढ़ाएँगे, कुछ को छोड़कर सभी चैनल अभद्र दृश्यों से भरे रहते हैं। क्या यही हमारी संस्कृति है? क्या महात्मागांधी या स्वामी विवेकानंद या दयानंद सरस्वती इन चैनलों को देखकर चुप बैठते? कदापि नहीं, वे महान पुरुष इसकी निंदा ही नहीं करते बल्कि ऐसे भद्दे चैनलों को तुरंत बंद करवा देते।

   भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ इसलिए है क्योंकि विदेशी संस्कृति की तुलना में

हमारे यहाँ संयुक्त परिवार की प्रथा है, धर्मनिरपेक्ष राज्य है, बड़ों का सम्मान किया जाता है, बहन-बेटियों की इज्जत की जाती है, राष्ट्र के प्रति अटूट प्रेम है, मद्‌यपान आदि का निषेध है, अहिंसात्मक प्रवृत्ति के लोग हैं...... इत्यादि। किंतु आजकल बहुत कम लोग हैं, जो अपनी संस्कृति तथा मर्यादा का अनुसरण कर रहे हैं।

2. महाभारत, गीता, रामायण, बाइबिल तथा कुरान जैसे महान ग्रंथों वाले इस देश में आज गंदी पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं की भरमार दिखाई पड़ती है। ऐसी गंदी पुस्तकों या पत्रिकाओं से मन पूर्णरूपेण दूषित हो जाता है। इन पुस्तकों से हम जितना दूर रह सकें, उतना ही बेहतर है।

3. महान राजनेताओं (जैसे-महात्मा गांधी, राजीव गांधी, लाल बहादुर शास्त्री, जवाहर लाल नेहरू) वाले इस देश में आज कुछ नेता अपने देश को ही बेचकर खाए जा रहे हैं; जिससे भ्रष्टाचार की गंदी धारा नेता से लेकर एक छोटे से चपरासी तक फैलती जा रही है और उसकी चपेट में आम जनता भी अछूती नहीं रह पा रही है। क्या ये हमारे मन को दूषित नहीं कर रहे? हम कहाँ तक बचें इनसे ? मगर हमें धैर्य और साहस दिखाते हुए इनका सामना करना होगा और देशद्रोहियों को खदेड़ना होगा। हमें फिर से खड़े होकर उनका सर्वनाश करना है। गंदी कुरीतियों, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, नंगे नाच, गंदे साहित्य आदि को समूल नष्ट करना होगा और अपनी अद्‌वितीय संस्कृति को फिर से बल देना होगा। यह कर्त्तव्य किसी अकेले का नहीं, हम सभी भारतीयों का है।

3. भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ इसलिए है क्योंकि विदेशी संस्कृति की तुलना में हमारे यहाँ संयुक्त परिवार की प्रथा है, धर्मनिरपेक्ष राज्य है, बड़ों का सम्मान किया जाता है, बहन-बेटियों की इज्जत की जाती है, राष्ट्र के प्रति अटूट प्रेम है, मद्‌यपान आदि का निषेध है, अहिंसात्मक प्रवृत्ति के लोग हैं...... इत्यादि।
4. हमें देशभक्ति पर आधारित फिल्मों तथा पारिवारिक फिल्मों को देखकर मनोरंजन करना चाहिए। श्रेष्ठ पुस्तकें हमेशा उत्तम विचारों को जन्म देती हैं, रामायण, महाभारत, गीता, वेद, बाइबिल आदि सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों को पढ़ना चाहिए।

5. दूषित विचारों से बचने के प्रमुख उपाय–

अच्छे लोगों से मित्रता करना।

अच्छी–अच्छी पुस्तकें पढ़ना।

दुष्ट और गंदे लोगों से दूर रहना।

अपने माता–पिता तथा गुरुओं की आज्ञा का पालन करना।

हिंसा करने वाले लोगों के मुँह नहीं लगना।

मारधाड़ और गंदे दृश्यों वाली फिल्में नहीं देखना।

अपने दैनिक कार्यों तथा अच्छे खेलों में व्यस्त रहना।

नशा करने वालों से दूर रहना।

गरीबों की सहायता करना

धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करना।

जीवों पर दया करना।

देशभक्ति पर आधारित फिल्मों तथा पारिवारिक या सामाजिक फिल्मों को देखकर मनोरंजन करना चाहिए।

अपनी संस्कृति के बारे में अध्यापकगणों से जानकारी प्राप्त करता।

सभी से प्रेमपूर्वक व विवेकपूर्ण व्यवहार करना।

यदि भूल से कोई गलती की है तो उसके लिए माफ़ी माँगना तथा उसे आगे न करने का प्रयत्न करना।

तन–मन को स्वस्थ रखने के लिए नित्य व्यायाम करना।

हमेशा सत्य बोलना।

पाठ–3 : महापुरुषों के अमृत वचन

क. निम्नलिखित वचन किन–किन महापुरुषों के हैं, उनके नाम लिखिए–

1. प्रेमचंद
2. कबीरदास
3. वर्जिल
4. सेनेका
5. प्लेटो

ख. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पुस्तकें
2. अंधविश्वास
3. चरित्र
4. सत्य

ग. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. गुण वाला व्यक्ति सब जगह अपना आदर करा लेता है।
2. मनुष्य को मीठी वाणी बोलनी चाहिए।
3. अच्छी पुस्तकें साथ रहने पर हमें मित्रों की कमी नहीं रहती।
4. ज्ञान उसे प्राप्त होता है जो श्रद्धविनि होती है, तत्पर रहता है तथा अपनी इंद्रियों को अपने वश में रखता है।

पाठ–4 : जैसा करोगे, वैसा भरोगे

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. काम की खोज में
2. कुएँ के पास
3. लालच

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓)
2. (✗)
3. (✓)
4. (✓)
5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. कुएँ
2. आभूषण, रुपए
3. भूख
4. नीयत
5. फल

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. एक बार तीन साथी काम की खोज में घर से निकले। उन्हें दिनभर कहीं कोई

काम नहीं मिला। वे बहुत निराश से हो गए।

2. कुएँ के पास से उन्हें थैले में सोने-चाँदी के आभूषण और रुपये मिले।
3. एक साथी नगर में भोजन लेने गया।
4. खाने का सामान लेने गए साथी ने पहले स्वयं भरपेट भोजन किया। उसके बाद उसने अपने साथियों के लिए खाने की वस्तुएँ ली। वह जंगल की ओर चलने वाला था कि उसके मन में लालच आ गया। उसने सोचा कि यदि उसके साथी मर जाएँ तो सारे आभूषण और रुपये उसे अकेले को ही मिल जाएँगे। यह विचार कर उसने भोजन में विष मिला दिया।
5. उसके दोनों साथियों के मन में बुरा विचार आया। उन्होंने सलाह की, ''क्यों न हम अपने तीसरे साथी को मार दें और सारे आभूषण तथा रुपये आपस में आधे-आधे बाँट लें।'' उन दोनों की नीयत भी खराब हो गई और उन्होंने अपने साथी को मारने का निश्चय कर लिया।
6. अंत में तीनों साथी मर गए।

पाठ-5 : पारखी नज़र

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. चार
2. एक प्रीतिभोज का
3. संपत्ति रक्षा का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)　　2. (✗)

3. (✓)　　4. (✓)

5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. राजगृह　　2. चार

3. प्रीतिभोज　　4. चौथी

5. योग्यता

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. सेठ के चारों पुत्रों के नाम थे - धनपाल, धनदेव, धनगोप और धनरक्षित।
2. सेठ की चारों बहुओं के नाम थे-उज्झिका, भोगवती, रक्षिका तथा रोहिणी।
3. सेठ ने सबके सामने अपनी चारों बहुओं को बुलाया और उनमें से प्रत्येक के हाथ में पाँच-पाँच चावल के दाने देकर कहा, ''इन्हें सँभालकर रखना और जब मैं माँगू तब मुझे दे देना।''
4. यह कहानी भारत के बिहार राज्य से संबंधित हैं।
5. योग्यता के अनुसार ही कार्य विभाजन होना चाहिए, क्योंकि इससे कार्य की सफलता निश्चित होती है।

पाठ-6 : महत्वाकांक्षा

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. जिराफ　　2. ऊँट

3. घोड़ा

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)　　2. (✓)

3. (✗)　　4. (✓)

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. दौड़ने　　2. शक्ति, गति

3. परेशान　　4. गधे

5. अहसास

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. हम सबको भगवान ने बनाया है।
2. भगवान ने घोड़े को बहुत शक्ति और गति प्रदान की, जिससे वह दूर-दूर जाकर अपने भोजन की तलाश आसानी से कर सके।
3. घोड़ा अपने शरीर की बनावट और रंग से संतुष्ट नहीं था।
4. जिराफ की गरदन झाड़ियों में फँस जाती थी।
5. अंत में घोड़े का स्वरूप घोड़ा ही था।

पाठ-7 : सच्ची श्रद्धा

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. रामधन और कुबेर
2. दयालु और सहृदयी
3. मानव सेवा

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)
2. (✓)
3. (✓)
4. (✗)
5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. मित्र
2. रामेश्वरम्
3. एक गाँव
4. व्यस्त
5. आँखों, आँसू

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. इस कहानी में वर्णित दोनों मित्रों के नाम रामधन और कुबेर हैं।
2. दोनों मित्र रामेश्वरम् तीर्थ स्थान की यात्रा के लिए निकले।
3. रामधन रास्ते में एक झोपड़ी में रुक गया।

4. मंदिर में दर्शन हेतु लाइन लगी थी। कुबेर ने देखा कि लाइन में उससे काफी आगे रामधन खड़ा था। वह दर्शन करके बाहर निकला तो रामधन को बहुत ढूँढ़ा पर वह न मिला।

5. मानव सेवा सबसे बड़ी पूजा है। दुखियों के दु:ख निवारण से बढ़कर दूसरा कोई पुण्य कर्म नहीं है।

पाठ-8 : सादगी

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. 'अ' व 'ब' दोनों
2. 'अ' व 'ब' दोनों
3. दूषित विचारों को

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)
2. (✗)
3. (✗)
4. (✓)
5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. सादगी
2. विलासिता
3. वेशभूषा
4. बहुमूल्य
5. तुच्छ

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. व्यक्ति के महान या तुच्छ होने का आकलन उसके रहन-सहन, पहनावे या शानो-शौकत के आधार पर नहीं, बल्कि उसके उच्च अथवा निम्न विचारों के आधार पर किया जाना चाहिए।

2. विलासितापूर्ण जीवन बिताने वाला व्यक्ति उच्च विचारों को बोझ तथा व्यर्थ समझकर उनसे बचने की कोशिश करता है।

   चूँकि विलासिता व वैभवपूर्ण जीवन बिताने के लिए बहुमूल्य सामान, साज-

शृंगार और अधिक मात्रा में धन की आवश्यकता होती है तथा धन के अभाव में ऐसा जीवन बिताना असंभव ही है; अतः व्यक्ति अनुचित कार्य में जुट जाता है और अनैतिक-से-अनैतिक कार्य करने लगता है तथा उसका चरित्र दिन-प्रतिदिन गिरने लगता है।

3. मास्को (रूस) रेलवे स्टेशन के एक प्लेटफॉर्म पर टहलता हुआ एक व्यक्ति किसी कुली की तलाश कर रहा था। साधारण-सी वेशभूषा में कोई व्यक्ति (लियो टॉलस्टाय) वहाँ से गुजरा। उस व्यक्ति ने उसे कुली समझकर उससे अपना सामान उठवाया और उसे मेहनताना दिया।

4. सादगी का जीवन बिताने वाले व्यक्ति की शक्ति व्यर्थ के दिखावे में खर्च नहीं होती। जीवन में उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करने का उसे पूर्ण अवसर मिलता है। सादगी से जीने वाली व्यक्ति किसी के ईर्ष्या-द्वेष का भी पात्र नहीं बनता।

5. संसारभर के संत, महापुरुष, विद्वान एवं महान लेखक सादगीपूर्ण जीवन के पक्षघर रहे हैं। हमारे प्राचीन भारत के जितने भी ऋषि-मुनि, विद्वान तथा महान साहित्यकार हुए हैं, सभी विलासिता से कोसों दूर रहे हैं। मनुष्य जीवन बहुमूल्य है। इसकी सार्थकता श्रेष्ठ कर्म करने में है। तड़क-भड़क और शानो-शौकत या दिखावे के मोह में फँसकर व्यक्ति अपने उद्देश्य अथवा लक्ष्य से भटक सकता है।

पाठ-9 : उपदेश देने का फल

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1.शमी का 2. 'अ' व 'स' दोनों

3. सज्जन को

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗) 2. (✓)

3. (✗) 4. (✓)

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. हेमंत
2. दयनीय
3. क्रोध
4. उपदेश
5. फलदायी

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. शमी के वृक्ष पर चटक एवं चटका नाम के पक्षियों ने अपना घोंसला बना रखा था।
2. वर्षा और ठंड से बंदर की बुरी हालत हो रही थी।
3. बंदर की यह दयनीय दशा चटका से देखी न गई, उसने बंदर से कहा – ''हे सोम्य ! हाथ और पैर मानव जैसे होने के कारण तुम तो मानव के समान दिखाई पड़ते हो। ऐसी स्थिति में तुम इस ठंड और वर्षा में क्यों कष्ट पा रहे हो? तुम तो हरेक काम करने में सक्षम हो, ईश्वर ने तुम्हें हाथ पैर दिए हैं, फिर भला अपने रहने के लिए घर क्यों नहीं बना लेते हो, जिसमें तुम्हारी शीत, ग्रीष्म और वर्षा ऋतु से रक्षा होगी? इस तरह दर–दर तो नहीं भटकना पड़ेगा।''
4. क्रोध में आकर बंदर उस शमी वृक्ष पर चढ़ गया और चटका को पकड़ लिया, इससे बाद उसने चटका के घोंसले को तोड़कर सौ टुकड़ों में विभक्त कर दिया और उसे धरती पर पटककर मार डाला।
5. उपदेश अथवा अच्छी सलाह उसे ही देनी चाहिए जो उसके योग्य हो अर्थात् ज्ञानवान हो, उस पर अमल करने को तैयार हो। मूर्ख को नहीं।

पाठ–10 : इनसे बचिए

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. बिल्ली ने
2. 'ब' व 'स' दोनों

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✗)
2. (✗)

3. (✓)　　　　4. (✗)

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. मुंबई　　　　2. अर्धविश्वास

3. अशुभ　　　　4. बलि

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. जगमोहन के छींकने पर रामवकील की दादी ने कहा कि ''तौबा...... तौबा ! तुझे भी अभी छींक आनी थीं..... बेटा, जरा रुक। ले थोड़ा पानी पी ले और पाँच मिनट बैठ जा।

2. रामवकील को एक जरूरी कार्य में मुंबई जाना था। वह सुबह को नहा-धोकर जल्दी ही तैयार हो गया। जैसे ही वह सामान लेकर घर से चलने को हुआ, उसके नौकर जगमोहन को अचानक ठींक आ गई। वास्तव में नौकर को जुकाम हो रहा था, स्वाभाविक है कि छींक तो आती ही। तुरंत उसकी दादी चिल्लाई - ''तौबा...... तौबा ! तुझे भी अभी छींक आनी थीं..... बेटा, जरा रूक। ले थोड़ा पानी पी ले और पाँच मिनट बैठ जा।

   दोबारा जैसे ही वह घर से बाहर निकला कि बिल्ली दौड़ती हुई उसके सामने से निकल गई। रामवकील के दादा जी ने उस रास्ता काटती हुई बिल्ली को देखा तो वे तुरंत बुदबुदाए, ''जी तो ऐसा चाह रहा है कि इस बिल्ली की गर्दन पकड़कर मरोड़ दूँ। बेटा .... ज़रा पाँच मिनट और बैठ ले, बिल्ली तुम्हारा रास्ता काट गई है। बहुत अशुभ होता है।'' बेबस रामवकील पुनः घर के अंदर घुस गया और बैठा-बैठा बुदबुदाने लगा, ''पता नहीं क्या बवाल है? कभी कुछ-कभी कुछ। मेरी गाड़ी का समय हो रहा है और ये दादा-दादी हैं कि मुझे बार-बार रोक लेते हैं। दादा जी आप क्या कह रहे हैं ? मुझे इस गाड़ी से जाना है। उसका जाने का समय हो रहा है।''

   रामवकील दौड़ते-दौड़ते रेलवे स्टेशन पर पहुँचा तो पता चला कि गाड़ी पाँच मिनट पहले छूट गई है। रामवकील दोनों हाथों को माथे पर रखकर पछताने लगा। उस दिन वह मुंबई न जा सका।

3. अंधविश्वास एक अभिशाप है, जो समाज की जड़ों को कमज़ोर कर रहा है।

मनुष्य को कुछ भी देखकर उसका कुछ भी मतलब नहीं निकालना चाहिए। जैसे-खाली छबड़ा सामने पड़ना, उल्लू का बैठना, सारस का उड़ना, आँखों का फड़कना, दूध का फैलना, एक आँख वाले व्यक्ति का सामने आना, ग्रहण पड़ना, टिका-टीकुली का टर्राना, कुत्तों का रोना इत्यादि।

4. जैसे कि जब एक सफाई कर्मचारी को कूड़ा उठाना है, तब वह खाली छबड़ा तो लेकर आएगा ही। पर कुछ अंधविश्वासी इस बात को अपशकुन मानते हैं कि अमुक व्यक्ति के सामने खाली छबड़ा पड़ गया, अब उसका वह काम नहीं बनेगा जिस काम से वह बाहर जा रहा था। बड़ी अजीब बात है! खाली छबड़े का उस व्यक्ति के काम से क्या संबंध!
5. एक अंधविश्वास है - उल्लू का बैठना। उल्लू बेचारा निर्जन, उजाड़ स्थानों पर रहना पसंद करता है; किंतु उसको आबादी में आने से रोक तो लगी हुई नहीं है। अब देखिए न, यदि उल्लू किसी घर के आस-पास या किसी घर की छत पर बैठ भी गया तो क्या हो गया? लेकिन अंधविश्वासी लोग मानेंगे कि वह घर अब नष्ट हो जाएगा, जैसे उल्लू एक पक्षी न होकर कोई परमाणु बम हो।

खण्ड 'क' - नैतिक शिक्षा

पाठ-2 : शिष्टाचार

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. अच्छे चरित्र का
2. इन सभी जगहों पर

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓)
2. (✗)
3. (✗)
4. (✓)
5. (✓)
6. (✓)
7. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. शिष्टता
2. अशिक्षित
3. सत्य
4. विनम्रतापूर्वक

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करना, माता-पिता की सेवा करना, सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना, सत्य बोलना, गलती के लिए क्षमा माँगना, ईश्वर में आस्था रखना, सभी बड़ों को 'आप' कहकर पुकारना, स्कूल तथा घर का कार्य समय से करना, विद्यालय समय से पहुँचना इत्यादि - ये सभी अच्छी आदतें शिष्टाचार के अंतर्गत आती हैं। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि शिष्टाचार से आशय, दूसरों से अच्छा व्यवहार करने से है।
2. भद्र और संत पुरुष अपने अच्छे चरित्र का निर्माण शुरू से ही करते हैं। इसीलिए सभी लोग उनके समक्ष हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं। दुनिया उनके अच्छे चरित्र का बखान करती है। उनका दूर-दूर तक नाम फैल जाता है।

3. जिस व्यक्ति से हमारे विचार मिलते हो। जो किसी भी व्यक्ति के बारे में बुरा ना सोचे और सकारात्मक सोच रखता हो तथा सभी से शिष्टतापूर्वक व्यवहार करता हो ऐसे लोगों के साथ मित्रता करनी चाहिए।
4. दूसरों से वस्तु माँगने के लिए शिष्टतापूर्ण भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
5. अपनों से बड़ों के लिए आप कहकर पुकारना चाहिए।

पाठ–3 : सोचो और करो

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. एक नेवला
2. साँप का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✗)
2. (✓)
3. (✗)
4. (✗)
5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. स्वामीभक्त
2. नेवला
3. भूल
4. कार्य

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. किसान के परिवार में तीन लोग थे।
2. किसान की पत्नी के घर से जाने के बाद घर में एक काला जहरीला साँप आया।
3. किसान की पत्नी ने जल से भरा घड़ा नेवले पर पटक दिया और क्योंकि उसने घर के दरवाज़े पर नेवले को बैठा देखा। नेवले के मुख पर साँप का खून लगा था। किसान की पत्नी ने समझा कि नेवले ने मेरे बच्चे को मार दिया है।

4. सोच-समझकर कार्य करना चाहिए। इससे कार्य में सफलता मिलती है और बाद में पछताना भी नहीं पड़ता है।

पाठ-4 : थॉमस एल्वा एडीसन

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. अमेरिका के
2. 12 वर्ष की आयु में
3. सन् 1877 ई० में
4. सन् 1880 ई० में

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)
2. (✓)
3. (✓)
4. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. बुद्धिमान
2. नौकरानी
3. विचारवान
4. प्रकाश

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. एडीसन ने अपनी टीचर से पूछा कि ''मैडम! पक्षी की तरह हम क्यों नहीं उड़ सकते?''
2. एक दिन उसका मित्र एडविन कुछ परेशान-सा उसके पास आया। एडीसन ने उससे परेशानी का कारण पूछा। उसके मित्र ने बताया कि वह जहाँ नौकरी करता है, वहाँ की मशीन खराब हो गई है। बहुत प्रयत्न करके घर भी ठीक नहीं हुई। एडीसन अपने मित्र के साथ मशीन देखने चल पड़ा। एडीसन ने मशीन को थोड़े ही समय में ठीक कर दिया। इससे कंपनी का मैनेजर एडीसन से बहुत प्रभावित हुआ।
3. एक समय की बात है कि एडीसन अखबार लिए फाटक पर रेल के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे दूर से रेल आती दिखाई दी। उसने देखा कि स्टेशन मास्टर का छोटा बच्चा खेलते-खेलते रेल की पटरी पर आ गया। रेल उसके समीप आने की वाली थी कि एडीसन ने अपने अखबार एक ओर उछाल दिए

और तुरंत बच्चे को गोद में उठाकर रेल की पटरी पार कर ली। स्टेशन मास्टर ने प्रसन्न होकर उसे इनाम देना चाहा परंतु एडीसन ने उससे नौकरी की प्रार्थना की। स्टेशन मास्टर ने रेलवे में उसे नौकरी दे दी।

4. सन् 1877 ई० में एडीसन में 'ग्रामोफोन' बनाया। इससे वह समस्त अमेरिका में प्रसिद्ध हो गया। यह सब उसकी माँ द्वारा प्रोत्साहित करने और उसके कठिन परिश्रम का फल था।

पाठ–5 : अहंकार : हमारा परम शत्रु

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. अहंकार   2. अपनी शक्ति का

3. संपत्ति रक्षा का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓)   **2. (✓)**

3. (✗)   **4. (✓)**

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. अभिमान   2. शक्ति

3. अहंकारी   4. सुखदायक

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. हमारा सबसे बड़ा शत्रु अहंकार है।

2. हमें अपने जीवन को सुखदायक बनाने के लिए अहंकार का त्याग करना पड़ेगा।

3. व्यक्ति ज्ञान, उच्च पद, सफलता या अन्य कोई विशेष उपलब्धि पाकर दूसरों को तुच्छ समझने लगता है। अपनी उस उपलब्धि को ही वह सब–कुछ समझने लगता है। यहाँ तक कि वह ईश्वर और अपने माता–पिता तक को भूल जाता है। प्राय: व्यक्ति अपने को उच्च पद पर पहुँचा देख, दूसरों को हीन समझने लगता है। यह उसका अहंकारी स्वभाव ही होता है। इसी प्रकार

अनेक व्यक्ति अपने निजी व्यक्तित्व, गुणों या सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण अहंकार का शिकार हो जाते हें। इसे व्यक्तिगत अहंकार की संज्ञा दे सकते हैं। हमारे पतन का कारण ही अहंकार की भावना की उत्पत्ति है। अहंकार मनुष्य को गर्त में ले जाता है।

4. अहंकारी व्यक्ति में निम्नलिखित दुर्गुण होते हैं।

   1. अहंकारी व्यक्ति अपनी वास्तविकता को खो बैठता है, उसे फिर अच्छे–बुरे कार्यों की समझ नहीं आ पाती

   2.अहंकार मित्रों के बीच दीवार खड़ी कर देता है। अहंकारी व्यक्ति अपने–अपने व्यवहार के कारण अपनी गहरी मित्रता को भी खत्म कर देता है।.

   3. अहंकार के कारण व्यक्ति मानवता के गुण त्यागकर दानवता के गुण ग्रहण कर लेता है और अपना वर्चस्व जमाने की कोशिश करने लगता है।

   4. अभिमानी पुरुष अपने दूरगामी परिणाम को ध्यान में नहीं रखता। उसे वर्तमान की भौतिकता का ही अंदाज रहता है।

5. अहंकार से छुटकारा कैसे मिले? इसका समाधान भी सरल है– सर्वप्रथम, हमें अपनी सफलताओं और उपलब्धियों को विनम्रता से ग्रहण करना चाहिए। हमें सफल होने पर, दूसरों के परामर्श पर आँखें बंद नहीं कर लेनी चाहिए, बल्कि हमें उनके प्रति सजग रहना चाहिए। यदि हम ऐसा न करेंगे तो हो सकता है कि आगे चलकर हमें असफलता का मुँह देखना पड़े।

   इस प्रकार हमें अपने सबसे बड़े शत्रु–अहंकार को तनिक भी मुँह नहीं लगाना चाहिए। अहंकार को समूल नष्ट कर देने में ही भलाई है।

6. **अहंकारी व्यक्ति की पहचान**

   अहंकारी व्यक्ति में निम्नलिखित दुर्गुण होते हैं–

   1. अहंकारी व्यक्ति अपनी वास्तविकता को खो बैठता है, उसे फिर अच्छे–बुरे कार्यों की समझ नहीं आ पाती।

   2. अहंकार मित्रों के बीच दीवार खड़ी कर देता है। अहंकारी व्यक्ति अपने–अपने व्यवहार के कारण अपनी गहरी मित्रता को भी खत्म कर देता है।

3. अहंकार के कारण व्यक्ति मानवता के गुण त्यागकर दानवता के गुण ग्रहण कर लेता है और अपना वर्चस्व जमाने की कोशिश करने लगता है।

4. अभिमानी पुरुष अपने दूरगामी परिणाम को ध्यान में नहीं रखता। उसे वर्तमान की भौतिकता का ही अंदाज रहता है।

पाठ-6 : मितव्ययियता

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. मितव्ययी | 2. उसकी पुत्रवधु ने

3. माथे में दर्द होने का

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓) | 2. (✓)

3. (✓) | 4. (✗)

5. (✗)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. कंजूस, मितव्ययी | 2. अवगुण

3. ससुर | 4. गज-मुक्ता

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. नई बहू ने देखा कि उसका ससुर खरीदे हुए घी को तुलवा रहा है और वजन करते समय एक बूँद घी गिर जाने पर उसे ससुर महाशय ने सहज भाव से उठाकर अपने हाथ में मल लिया है, तो पुत्रवधू को लगा कि जिस घर के आदमी इतने कंजूस हैं कि एक बूँद घी की भी जिन्हें समाई नहीं है, उस घर में मेरा कैसे निभेगा? अतः उसने इस बात की परीक्षा लेनी चाही कि ससुर महाशय सचमुच ही इतने कंजूस हैं या इसमें कुछ रहस्य है। उसने पड़ोस के एक आदमी को बुलाकर ससुर की परीक्षा लेने की योजना बनाई।

2. तरह-तरह की दवाएँ दी गईं, लेकिन दर्द तो कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। सचमुच ही कोई दर्द हो, तब तो दवा का असर हो और दर्द कम हो,

लेकिन दिखावटी दर्द कैसे कम हों ?

3. सिरदर्द दूर करने का बनावटी वैद्य ने उपाय बताया कि "यदि गज-मुक्ताएँ को पीसकर उस चूर्ण का लेप इसके माथे पर किया जाए, तो दर्द तत्काल ठीक हो जाएगा।"
4. सेठ की पुत्र-वधु ने अपना सिर सेठ के पाँवों में रख दिया और माफी माँगने लगी। सेठ के पूछने पर उसने सारी बात सच-सच बता दी। सेठ ने उसे माफ़ कर दिया।

पाठ-7 : एकाग्रचित्त

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. शांति आवश्यक है
2. व्यास जी द्वारा रचित है।
3. गणेश जी के कुछ भी न पूछने के कारण

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✗)
2. (✗)
3. (✗)
4. (✓)
5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. व्यास जी
2. महाभारत
3. गणेश जी
4. एकाग्रता
5. एकाग्रता

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. यदि ध्यान पूरी तरह एक ही जगह टिका लिया जाए तो प्रत्येक बात स्पष्ट हो जाती है। और कार्य बड़ी अच्छी तरह पूरा होता है। ध्यान का एक जगह टिकना ही एकाग्रता है।

2. गणेश जी ने एक शर्त रखी कि ''आप बोलते रहिए, मैं लिखता रहूँगा पर जब तक कोई बात मैं अच्छी तरह समझ नहीं लूँगा, आगे नहीं लिखूँगा।

3. गणेश जी मुसकराए और बोले, ''ऋषिवर ! ग्रंथ लिखने से पहले मैं सोचता था कि यह बड़ा कठिन होगा। इतनी लंबी रचना मैं चुपचाप कैसे लिख पाऊँगा? किंतु जब मैंने अपना पूरा ध्यान सुनने और लिखने में लगाया तो हर बात अपने आप स्पष्ट हो गई। न तो मुझे थकावट हुई और न ही कुछ पूछने की आवश्यकता पड़ी। यह सब ध्यान को एक जगह टिकाने के कारण ही संभव हो पाता।''

4. व्यास जी बड़े हैरान हुए और बोले, '' आपने तो शर्त रखी थी कि आप हर बात पूरी तरह से समझकर ही लिखेंगे, पर आप तो पूरी तरह मौन रहे। क्या हर बात सहजता में आपको पूरी तरह समझ आती गई? मेरे विचार में कुछ बातें बहुत कठिन थीं।''

5. स्वयं करें।

पाठ-8 : शुद्ध अन्न

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए–

1. असात्विक भोजन करने की विवशता 2. अपने धन की अशुद्धि समझना

3. आने वाले समय के अनुमान के कारण

4. उस अन्न से है, जो परिश्रम व ईमानदारी के धन से खरीदा गया हो।

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✗)

3. (✓) 4. (✗)

5. (✓)

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. युधिष्ठिर 2. महानता

3. शुद्ध 4. मन

घ. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. अर्जुन महल में पहुँचे तो देखा कि वहाँ उनके भाई युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण, और एक ब्राह्मण बैठे हैं। तीनों ही बड़े उदास हैं।
2. ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण की ओर देखा। श्रीकृष्ण बोले, ''अर्जुन, आज महाराज युधिष्ठिर ने इन ब्राह्मण देव को भोजन के लिए आमंत्रित किया है। तुम तो जानते ही हो कि शास्त्रों में शुद्ध धन के द्वारा खरीदे गए अन्न को खाने का विधान है। राजा युधिष्ठिर के बुलाये जाने पर यह विप्र इंकार तो नहीं कर पाए। इन्होंने बहुत पूछने पर मुझे बताया कि यह इस बात पर दुःखी हैं कि आज उन्हें इस व्यक्ति का अन्न खाना पड़ेगा, जिसका धन उसके अपने परिश्रम का नहीं है।
3. धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने उत्तर दिया, ''मैं यह सोचकर दुःखी हूँ कि 'काश ! मैं अपने परिश्रम द्वारा अपार्जित धन से इन अतिथि की सेवा कर पाता।
4. आने वाले समय में तो ब्राह्मण स्वयं अन्याय के धन से मिलने वाले भोजन में दौड़कर जाएँगे। उन्हें केवल स्वादिष्ट भोजन का ही लोभ रहेगा। वह यह कहाँ सोचेंगे कि किसी का धन या अन्न शुद्ध है या नहीं। इसी प्रकार पाप या अन्याय द्वारा किसी भी प्रकार धन कमाकर जब लोग दान करेंगे, तो इस पृथ्वी की क्या हालत होगी?'' यह कहकर सदैव मुसकराने वाले श्रीकृष्ण भी सोच में पड़ गए।
5. हमें अपने परिश्रम और ईमानदारी से कमाए धन पर ही निर्भर रहना चाहिए।

पाठ-9 : सफल व्यक्तियों के मूलमंत्र

क. सही विकल्प पर सही '✓' का चिह्न लगाइए-

1. मेहनत 2. खेलकूद

ख. सही कथन पर सही (✓) और गलत कथन पर गलत (✗) का चिह्न लगाइए-

1. (✓) 2. (✓)

3. (✗) 4. (✗)

5. (✗)

ग. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

1. रुचियों

2. सफलता

3. ईमानदारी

4. विजेता

घ. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

1. 1. इन मूलमंत्रों को जब भी कोई कार्य करें, अपनी रुचियों के अनुसार करें। आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

   2. हर किसी व्यक्ति की अपनी अलग–अलग रूचि होती है। संसार में जितने पेशे हैं, उतनी ही रुचियाँ हैं। मैं पढ़ाई में रुचि रखता हूँ, सचिन खेल में रुचि रखता है, अमित फिल्म में रुचि रखता है, मोनिका खाना बनाने में रुचि रखती है....... इत्यादि।

2. सफलता प्राप्ति के लिए गरीब, मंदबुद्धि होना ही जरूरी है, बल्कि इसका सीधा–सा अर्थ यह है कि इन लोगों की सफलता के पीछे बहुत गहरी लगन, मेहनत तथा ईमानदारी रही है।

3. सफल व्यक्ति के गुण–

   1. सफल व्यक्ति हमेशा समय के पाबंद होते हैं।

   2. सफल व्यक्ति खुद को हमेशा बेहतर और होशियार समझते हैं।

   3. सफल व्यक्ति पहले सुनते है और उसके बाद बोलते हैं।

   4. सफल व्यक्ति काम पूरा करने के लिए समय का इंतजार नहीं करते।

   5. सफल व्यक्ति दूसरों की प्रशंसा करते हैं तथा उन्हें शाबासी देते हैं।

   6. सफल व्यक्ति हमेशा अपने मन को शांत रखते हैं।

4. रुचि का अर्थ विकल्पों की उपस्थिति में व्यक्ति किस विकल्प का चयन करता है जैसे– पढ़ने–लिखने, खेलने या सोने में। यदि कोई खेलने को चुनता है तो खेलना उसकी रुचि है।

   1. जब भी कोई कार्य करें, अपनी रुचियों के अनुसार करें। आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

   2. हर किसी व्यक्ति की अपनी अलग–अलग रुचि होती है। संसार में जितने पेशे हैं, उतनी ही रुचियाँ हैं। मैं पढ़ाई में रूचि रखता हूँ, सचिन खेल में रूचि

रखता है, अमित फिल्म में रुचि रखता है, मोनिका खाना बनाने में रूचि रखती है....... इत्यादि।

उन रूचियों का आनंद वे ही लोग ले पाते हैं जो उनमें पूर्णत: पारगंत हो जाते हैं। आप देख सकते हैं कि अधिकतर सफल व्यक्तियों ने उसी क्षेत्र में कार्य किया, जिसमें उनकी रुचि थी।

अगर आप भी अपनी रुचि को ध्यान में रखकर उस कार्य को चुनेंगे तो सफलता अवश्य ही आपके कदमों को चूमेगी।

5. यह सर्वविदित है कि व्यक्ति सबको धोखा दे सकता है किंतु स्वयं को नहीं। इसलिए स्वयं के प्रति ईमानदारी का गुण हमारे मन में उत्पन्न होना चाहिए। एक छात्र या आप स्वयं गृहकार्य न करने का एक शिक्षक की डाँट से बचने के लिए झूठ बोल सकते हैं, किंतु अपने हृदय में आप जानते हें कि आप झूठ बोल रहे हैं।

6. जीवन में आई हुई समस्याओं का सामना करने की बजाय यदि आप उन परिस्थितियों पर ध्यान देंगे तो निश्चित ही अपने पथ से दूर होते चले जाएँगे। दु:ख और असफलताओं को यथाशक्ति धैर्यपूर्वक सहन कर इंसान को अधिक मजबूत बनना चाहिए।

   किसी भी समस्या को झेलने के लिए उसे सामान्य रूप में लें आप अलग-अलग दृष्टिकोण से समस्या को देखकर ऐसा कर सकते हैं। समस्या से निजात पाने के कुछ आवान रास्ते भी खोजे जा सकते हैं। ऐसा करने से आप समस्या से होने वाली क्षति से स्वयं को सुरक्षित रख सकते हैं। हमेशा समस्या से बचने का प्रयास न करने की बजाय नई परिस्थिति का सामना करें।